Dr.Raman Kumar Thakur

Asstt.Prof.(Guest)Department of Economics, D.B.College jaynagar.

Class:-B.A.part-1(H)paper-2.

Date-27-07-2020.

Topic:- भारत में विदेशी निवेश एवं उसका परिचालन तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियां(Foreign investment and functions in india Multinational Companies):- भारत के आर्थिक विकास में विदेशी पूंजी का महत्त्व पूर्ण योगदान रहा है। उसके दोअंग हैं प्रथम, विदेशी सहायता के रूप में जो सामान्यता ऋण के रूप में रियायती शर्तों पर देश को प्राप्त हुई है । जैसे ब्याज की नीति दर ऋण अदा करने की लंबी अवधि आदि विदेशी सहायता का एक छोटा भाग अनुदान के रूप में मिलता रहा है जिसके संबंध में न तो मूलधन चुकाना पड़ता है और ना ही ब्याज विदेशी पूंजी का दूसरा अंग है निजी विदेशी निवेश के रूप में जैसे इक्विटीज अंश पूजी, जिसका मुख्य उद्देश्य लाभा'जन है:- विदेशी सहायता विदेशी सहायता प्राप्त करने के मुख्य रूप से चार स्रोत होते हैं :- 1).विदेशी निजी विनियोग, प्रत्यक्ष विनियोग, विभागीय विनियोग,

2)विदेशी बैंक निगम या संस्थाओ से उधार के.

3). अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों जैसे विश्व बैंक एशियन बैंक तथा अन्य संस्थाएं से ऋण एवं अनुदान प्राप्त करके।

4). सरकारी स्तर के ऋण लेकर.

* विदेशी सहायता का महत्व (Importance of foreign Aid) :-
किसी भी अविकसित एवं विकासशील देशों को विदेशी सहायता की आवश्यकता निम्न कारणों से होती है:-

1). देश के प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करने के लिए

2) देश के आर्थिक विकास में वृद्धि करने के लिए

3) निर्यातो की कमी को दूर करने के लिए।

4). देश में वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य में हो रही वृद्धि को कम करने के लिए.

5). राजनीतिक सहयोग प्राप्त करने के लिए.

6) देश के प्राकृतिक संसाधनों का पर्याप्त मात्रा में विदोहन करने के लिए.

7). देश में उत्पन्न आर्थिक असमानता को कम करने के लिए.

भारत को प्राप्त विदेशी सहायता बंधित एवं अबंधित दोनों रूपों में ही देखने को मिलती है विदेशी सहायता का केवल

40% भाग ही अब बंधित है जिसे देश की आवश्यक प्राथमिकताओं के अनुसार प्रयोग करने की स्वतंत्रता है तथा शेष 60% बंधित सहायता ऋण दाता देश द्वारा निर्धारित शर्तों एवं परियोजनाओं के रूप में बंधी हुई है जिसका अन्यत्र प्रयोग नहीं किया जा सकता।

* विदेशी प्रत्यक्ष निवेश(Foreign Direct investment):- भौतिक संपदा जैसे कारखानों भूमि पूंजीगत वस्तुएं तथा आधारिक संरचना वाले क्षेत्रों में जब विदेशी निवेशक अपना धान लगाते हैं कोई से प्रत्यक्ष विदेशी पूंजी निवेश एफडीआई कहा जाता है ।अधिकांशतया इस प्रकार के निवेश बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किए जाते हैं।

* बहुराष्ट्रीय कंपनियां(Multi-National Corporations) :- बहुराष्ट्रीय निगमों या कंपनियों से आशय एक ऐसी कंपनी से है जिसके कार्यक्षेत्र का विस्तार एक से अधिक देशों में होता है और जिसका उत्पादन एवं सेवाएं उस देश से बाहर भी संपन्न होती है जिसमें यह जन्म पंजीकृत या निगमित होती है।

* विशेषताएं(features):-

1) ऐसी कंपनी का व्यवसाय एक से अधिक देशों में फैला हुआ रहता है

2)ऐसी कंपनियां अपने जन्म स्थान से बाहर भी कार्य करती है. 3)ऐसी कंपनियों के द्वारा दिए गए निर्णय घरेलू नीतियों से मेल नहीं खाते हैं.

4) कभी-कभी यह अन्य कंपनियां द्वारा भी नियंत्रित होती है इनका स्वामित्व देश में ही होता है परंतु व्यवसाय बाहर होता है ।

5) विनियोग की दृष्टि से यह विशाल होती है।

6) यह अधिकतम लाभ के उद्देश्य पर कार्य करती है।

* भारत में बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका(Role of Multi-national Corporation in India):-

1) औद्योगिकरण में सहायक. 2)साधनों का विदोहन .

3)उत्पादन तकनीकी में परिवर्तन. 4)शोध एवं विकास एवं

5)विपणन में सहायक.

* बहुराष्ट्रीय निगमों के दोष(Demerits of multi National Corporation):-

1). उपभोक्ता के लिए हानिकारक

। 2)तकनीक हस्तांतरण मूल्यवान.

3)मुद्रा में हेरा फेरी.

4)रचित तकनीक को न अपनाना.

5)एवं क्षेत्रीय आर्थिक असमानताऐ.